शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

सुशासन यह भ्रम

विनोबा

लोग सोचते हैं कि हम दुनिया में सुशासन स्थापित करेंगे। यह भ्रम है। या तो शासनमुक्ति होगी या दुःशासन चलेगा। प्रयत्न होगा सुशासन का, लेकिन आयेगा दुःशासन ही। फिर वह किसी भी देश में हो। अनुभव यही आयेगा कि शासन की मार्फत हम जो भी आयोजन करते हैं - अच्छा हो यहा सोचकर करते हैं - उसमें से समस्याएं निर्माण होती हैं। परस्पर द्वेष निर्माण होता है, हिंसा उत्पन्न होती है।

जिसे आप सुशासन कहते हैं, वह शस्त्रारूढ़ है, इसी लिए मैं उससे डरता हूं। वैसे सुशासन कौन नहीं चाहता ? समाज में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि सब काम शांति से पूर्ण हों। सुशासन की जरूरत है ही, लेकिन आज जो सुशासन है, उसका आधार क्या है, यह प्रश्न है। शस्त्र यही आखिरी सेंक्शन है - फिर वह लोकतंत्र हो, कम्युनिज्म हो, या फासिस्ट राज हो, या किसी राजा का राज हो। यह सुशासन कब खत्म होगा, कह नहीं सकते। इसलिए सुशासन-कुशासन यह भेद अवास्तविक हुआ है।

शासन देखते-देखते दुःशासन हो जाता है। लोकतंत्र का आधार यदि लश्कर रहा, तो उसका रूपांतरण लश्करशाही में होने में कितनी देर लगेगी ? ऐसी अवस्था में यदि हम शासन पर ही निर्भर रहेंगे, तो शासन का रूपांतरण एक क्षण में दुःशासन में, कुशासन में हो सकता है।

और फिर, सुशासन हो तो भी वह सुशासन नहीं है। क्योंकि उसमें हमस ब यंत्र की तरह जड़ बन जाते हैं। जिस शासन में मनुष्य की बुद्धिमत्ता का विकास नहीं होता, आत्मबुद्धि जगती नहीं, स्वयंबुद्धि, स्वयंप्रज्ञा का जिसमें उदय नहीं होता, वह योजना भले ही सुखदायी हो, तो भी विकास की दृष्टि से वह उपयोगी नहीं है। और इसी लिए उसे सर्वोत्तम व्यवस्था नहीं कह सकते।

सरकार एक गैर जरूरी संस्था

हमारा मुख्य विचार है कि सारी दुनिया को सरकारों से ही मुक्ति मिले। आज सारी दुनिया किसी रोग से पीड़ित है, तो वह इस सरकार रूपी रोग से पीड़ित है। आज राम-नाम की जगह 'सरकार' नाम ने ले ली है। 1947 से हम लोग ज्यादा गुलाम बन गए हैं। लोग समझते हैं कि हमें कुछ करना-धरना तो है नहीं, जो कुछ करना है, सरकार को ही करना है। आज कुल दुनिया में एक भ्रम पैदा हुआ है कि सरकारों के कारण हम बचते हैं, अगर सरकार न होती, तो हम बच न पाते। दुनिया के लोगों को यह भ्रम है कि सरकार के बिना हमारा काम चल नहीं सकता। हम यह समझ सकते हैं कि लोगों का काम खेती के बिना नहीं चलेगा, उद्योगों के बिना नहीं चलेगा, प्रेमभाव के बिना नहीं चलेगा, धर्म के बिना नहीं चलेगा। हम यह भी समझ सकते हैं कि यदि शादी की विधि न हो, कुटुंब-व्यवहार न हो, तो लोगों का काम नहीं चलेगा। लेकिन ऐसी वस्तुओं में हम सरकार की गिनती नहीं करते।

वास्तव में जनता को सरकार की कोई जरूरत नहीं है। वह तो एक समाज के प्रवाह में चीज बन गयी। समाज में एकरसता निर्माणकरने में हम समर्थ सिद्ध नहीं हुए। समाज में अनेकविध

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जून 2020
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भेद पड़ गयै हमें अविरोध के काम करने का पूरा शिक्षण नहीं मिला। उसके बदले हम राज्यसत्ता से काम लेना चाहते हैं। जो काम लोगों को शिक्षित करने से हो सकता है, उसे हम दंडशक्ति से करना चाहते हैं।

शासन से भयवृद्धि

सारांश, जब तक हम दुनियाभर के सब लोग ये सारी सरकारों अपने सिर पर उठाये रहेंगे, तब तक काम नहीं बनेगा। क्योंकि आज चंद लोग समझते हैं कि हम करोड़ों लोगों के लिए जिम्मेदार हैं और वे करोड़ों लोग भी समझते हैं कि ये लोग हमारी रक्षा करते हैं। इसी लिए उनके चित्त सदा भयभीत रहते हैं। जहां चित्त भयभीत होता है, वहां सारा दारोमदार सेना पर आ जाता है और सेना पर जितना भार रखा जाता है, उतना भय बढ़ता है।

बड़े-बड़े देश शस्त्रास्त्र सामग्री बढ़ाने में लगे हैं। रावण के पास भी बहुत शस्त्रास्त्र थे, लेकिन वह निर्भय नहीं था। यही हालत आज दुनिया की है। जिनके पास ज्यादा शस्त्र हैं वे भी डरते हैं और जिनके पास कम शस्त्र हैं, वे भी डरते हैं। इस तरह कुल दुनिया भयग्रस्त है। यह सारा भय सरकारें पैदा करती हैं। आज तो दुनियाभर की सरकारों का यह धंधा है कि जनता में भय पैदा किया जाये कि बाहर से आक्रमण होगा। वे लोगों को भास कराते हैं कि उनकी सेवा के बिना लोग बिलकुल अनाथ और खतरे में पड़े हैं। इसका नाम है सरकार की रक्षणशक्ति !

व्यवस्थापकों, अब हट जाइए

व्यवस्थापक वर्ग कहता है, तुम्हारी व्यवस्था के लिए हमारी जरूरत है। हम कहते हैं, हमारी कौन-सी जरूरत तुम पूरी करते हो ? हमें भूख लगती है। परमात्मा की दी हुई जमीन में हम खेती करते हैं। व्यवस्थापक वर्ग तो खेती नहीं करता। इसलिए हमारी भूख मिटाने के लिए तुम्हारी कोई जरूरत नहीं है। प्यास बुझाने के लिए भी तुम्हारी जरूरत नहीं है। बारिश होती है, जलाशयों में पानी भर जाता है। इस तरह में जमीन में से अन्न और आसमान से पानी मिल जाता है। अब रही हवा। उसके लिए भी व्यवस्था की जरूरत नहीं। परमात्मा ने हरएक को एक-एक नाक दी है। नीतिशास्त्र से हमने विवाह करके कुटुंब संस्था बनाना सीखा है। संतों ने हमें पड़ोसी से प्रेम करना सिखाया है। इस तरह हमारी सारी जरूरतें पूरी हो जाती हैं। राज्य-व्यवस्थापकों के लिए अब बचता ही क्या है ? अब मेहरबानी करके हट जाइए, तो हममें ज्यादा शक्ति आयेगी, दुःख मिट जाएगा और सुख होगा। - तीसरी शक्ति, विनोबा साहित्य, खण्ड 16